विद्या भवन बालिका लिद्यापीठ,लखीसराय

वर्ग नवम विषय संस्कृत शिक्षक श्यामउदय सिंह

पाठ: द्वितीय: पाठनाम स्वर्णकाक:

ता: 24-04-2021 (एन.सी.ई.आर.टी.पर आधारित)

- अहम् त्वत्कृते सोपानमवतारयामि ,तत्कथय स्वर्णमयं, रजतमयं, ताम्रमयं वा ?कन्या प्रावोचत् -अहं निर्धनमातुर्दुहिता अस्मि। ताम्रसोपानेनैव आगमिष्यामि।परं स्वर्णसोपानेन सा स्वर्ण-भवनमाससाद ।
- शब्दार्थ

  त्वत्कृते –तुम्हारे लिए ,अवतारयामि –उतारता हूँ ,प्रावोचत् –बोली मातु:-मा की ,दुहिता –बेटी , ताम्रसोपानेन –ताँबे की सीढ़ी से स्वर्णभवनम् -सोने के महल में ,आससाद –पहुँची
- अर्थ

ठहरो मैं तुम्हारे लिए सीढी उतारता हूं ,बताओ तो सोने की, चांदी की अथवा तांबे की, (किसकी उतारुँ) कन्या बोली में निर्धन(गरीब) मां की बेटी हूं। तांबे की सीढ़ी से ही जाऊंगी परंतु वह सोने की सीढ़ी से स्वर्ण भवन में पहुंची।